भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों का परिचय

(कत्थक, भरतनाट्यम, कथकली मणिपुरी)

मानवीय अभिव्यक्तियों के रसमय प्रदर्शन की कला को 'नृत्य' कला कहते हैं। मानव जन्म से अपने भावों को अभिव्यक्त करने लगता है। बच्चा जन्म से हो आंगिक क्रियाओं, ध्वनि एवं बड़ा होने पर शब्दों के माध्यम से अपने भाव प्रदर्शित करने लगता है। नृत्य अभिनय कला का सांगीतिक रूप है जिसमें शब्द, संगीत, मुद्राओं का समन्वय है। नृत्य कला देवी देवताओं, दैत्य–दानवों, मनुष्यों एवं पशु पक्षियों को सदैव से ही अति प्रिय रही हैं।

भारतीय संस्कृति एवं धर्म आरम्भ से ही नृत्यकला से जुडे रहे हैं। वेदों एवं पुराणों में इसके अनेक उदाहरण मिलते है। आज भी नृत्य की विषय–वस्तु महाकाव्य एवं पौराणिक कथाओं से सम्बंधित है। समयानुसार नृत्य कला की विषय–वस्तु मे वातावरण एवं जनरूचि के अनुसार परिवर्तन होता आया है। पत्थर के समान कठोर व दृढ़ प्रतिज्ञ मानव ह्रदय को भी मोम सदृश पिघलाने की शक्ति इस कला में है।यही इसका मनोवैज्ञानिक पक्ष है। यह कला मनोरंजक तो है ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का साधन भी है इसीलिए यह कला–प्रवाह पुराणों एवं श्रुतियों से होता हुआ आज तक अपने शास्त्रीय स्वरूप में धरोहर के रूप में हम तक प्रवाहित है। भारत मे

लोक एवं शास्त्रीय नृत्यों ने जन मानस को सदैव ही आकर्षित किया है। लोक नृत्यों का विकसित एवं परिष्कृत रूप ही शास्त्रीय नृत्य है। वर्तमान में लखनऊ घराने के पं. बिरजू महाराज, सितारा देवी, शोभना नारायण, मालविका मित्र, कुमुदिनी लाखिया, आदि प्रमुख है। जयपुर् घराने में पंडित कुदनलाल गंगानी, पंडित गिरधारी महाराज, पं. कन्हैया लाल जबड़ा, डॉ. शाशि सांखला कत्थक गुरू के रूप में विख्यात है। नृत्य के विषय में उपलब्ध ग्रंथो में सबसे प्राचीनतम भरत मुनि का नाट्यशास्त्र है। वेदों मे भी नृत्य संबंधी उल्लेख प्राप्त होते हैं। गुफाओं में प्राप्त आदि मानव के उकेरे चित्रों तथा हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त मूर्तियाँ नृत्य कला की अति प्राचीनता सिद्ध करती है।

भरत के नाट्यशास्त्र के समय तक भारतीय समाज में अनके प्रकार की कलाओं का पूर्ण रूपेण विकास हो चुका था। नाट्यशास्त्र में नृत्य कला के सिद्धान्तों का लिखित वर्णन प्राप्त होता है। संस्कृत के प्राचीन ग्रंथो जैसे कालीदास के शाकुंतलम्, मेघदूत में, वात्स्यायन की कामसूत्र तथा मृच्छकटिकम आदि ग्रंथो में नृत्य का विवरण भारतीय संस्कृति की कला प्रियता को दर्शाता है। आज भी हमारे समाज में नृत्य–संगीत को पर्याप्त महत्व दिया जाता है। भारत के विविध शास्त्रीय नृत्यों की अनवरत शिष्य परम्पराऐं इस सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित करती रही हैं।

भारत के विभिन्न प्रदेशों में नृत्य की अनेक शैलियाँ पाई जाती है, इन नृत्य शैलियों में सात विशेष महत्वपूर्ण हैं, जिनकी गणना शास्त्रीय नृत्य शैलियों के अन्तर्गत की जाती है।

1. कत्थक 2. भरतनाट्यम 3. कथकली 4. मणिपुर
5. ओडिसी 6. कुचिपुड़ी 7. मोहिनी अट्टम

कत्थक

कत्थक शैली का जन्म ब्राम्हण पुजारियो द्वारा हिन्दुओं की पारम्परिक पुनः गणना में निहित है जिन्हे 'कथिक' कहते थे। कथिक नाटकीय अन्दाज में हावभावों का उपयोग करते थे, कालान्तर में यह कथा कहने की शैली और अधिक विकसित होकर नृत्य रूप बन गया। कत्थक शब्द की उत्पत्ति कथा से हुई। 'कथनं करोति कथक' अर्थात जो कथन करता है वह कथक है।

कत्थक उत्तर भारत की नृत्य शैली है। यह बहुत ही प्राचीन है, क्यो कि महाभारत में भी इसका वर्णन है। मध्यकाल में कृष्ण कथा और नृत्य से इसका सम्बन्ध था।

प्राचीनकाल में कथाकास नृत्य के कुछ तत्वों के साथ महाकाव्य एवं पुराणों से कहानियाँ सुनाया करते थे। पीढ़ी दर पीढ़ी यह नृत्य प्रचलित होने लगा। इसे कथक नटवरी नृत्य भी कहते थे। तेरहवीं शताब्दी तक इस नृत्य ने शैली गत रूप ले लिया था। भक्ति आन्दोलन के समय रासलीला पर कथक का प्रभाव पडा। इस तरह का नृत्य प्रदर्शन कछावछकास मंदिरों में भी करने लगे।

पंद्रहवी शाताब्दी तक यह नृत्य आध्यात्मिकता से दूर हटकर लोक तत्वों से प्रभावित होने लगा।

मुगलों के युग में फारसी नर्तकियाँ 100 से 150 घुंघरू पहन कर कदमों से ताल (लयकारी) द्वारा विभिन्न भावों को प्रकट करने लगी।

उत्तर भारत में मुगलों के आने पर इस नृत्य को शाही दरबार ले जाया गया जहां इसका विकास परिष्कृत कला रूप में हुआ। इस नृत्य में अब धर्म की अपेक्षा सौंदर्य बोध पर अधिक बल दिया, परिणामस्वरूप इसमें अनेक बुराइयाँ आ जाने के कारण समाज से इसका बहिष्कार हो गया। कच्छवा के राजपूतों के राजसभा में जयपुर घराना और अवध के नवाब वाज़िद अली शाह के राजसभा में लखनउ घराने का विकास हुआ कालान्तर में वाराणसी की सभा में बनारस घराने तथा अपनी विशिष्ट रचनाओं के लिए प्रसिद्ध छत्तीसगढ़ का रायगढ़ घराने का भी विकास हुआ। रायगढ़ घराना ज्यादा प्रसिद्ध नहीं हो पाया। इस प्रकार इस नृत्य के तीन घराने लखनऊ, बनारस और जयपुर हैं, जिनकी अपनी शैलीगत विशेषताऐ हैं। कत्थक नृत्य की प्रस्तुति एक विशेष क्रम से की जाती है।

1. नृत्त अर्थात् वन्दना देवताओं का (मंगलाचरण)।
2. ठाठ अर्थात् चक्कर (तिहाईयों) के साथ सम पर आना।
3. आमद अर्थात् प्रवेश जो ताल बद्ध बोल का पहला परिचय होता है।
4. सलामी–मुस्लिम शैली में दर्शकों का अभिवादन।
5. कविता–कविता के अर्थ को नृत्य में प्रदर्शित करना।
6. पड़न–तबला और पख़ावज के बोलों पर नृत्य।
7. परमेलु–एक बोल या रचना जहाँ प्रकृति का प्रदर्शन होता है।
8. गत–यहाँ दैनिक जीवन के सुन्दर चाल–चलन को दिखाया जाता है।
9. लड़ी–तत्कार की रचना
10. तिहाई–एक रचना जहाँ तत्कार तीन बार दोहराया जाती है और सम पर नाटकीय रूप से समाप्त होता हैं।
11. नृत्य– भाव को मौखिक टुकड़े की एक विशेष प्रदर्शन शैली में दिखाया जाता है।

भरतनाट्यम्

भरतनाट्यम् दक्षिण भारत के तमिलनाडू राज्य से संबंधित है, अब यह नृत्य दक्षिण भारत के अलावा उत्तर भारत में भी प्रसिद्ध है। यह नाम 'भरत' शब्द से लिया गया तथा इसका सम्बन्ध नृत्य शास्त्र से हैं। भरत नाट्यम् में जीवन के तीन मूल तत्व दर्शन शास्त्र, धर्म व विज्ञान है। यह एक गतिशील व सांसारिक नृत्य शैली है। इसकी प्राचीनता स्वयं सिद्ध है। इसे सुरूचि व सौदंर्य सम्पन्नता का प्रतीक बताया जाना पूर्णतः संगत है। इस परम्परा में पूर्ण समर्पण, सांसारिक बंधनों से विरक्ति तथा निष्पादनकर्ता का चरमोत्कर्ष पर होना आवश्यक है। भरतनाट्यम तुलनात्मक रूप से नया नाम है। पहले इसे सादिर, दासीअट्टम् और तन्जावुरनाट्यम के नाम से जाना जाता

था। भरतनाट्यम के कुछ प्रमुख कलाकार–लीला सैमसन, मृणालिनी साराभाई, वैजयंती माला, मालविका सरकार, यामिनी कृष्ण मूर्ति, सोनल मानसिंह, रूक्मिणी देवी, अरूणेय आदि हैं।

इसका सम्बन्ध मंदिरो एवं देवदासियों से रहा है और इसी कारण आज हमें यह नृत्य अपने मूल रूप में प्राप्त हो सका है। इस कला में देवदासियों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इसके आचार्य नत्तुवनः कहलाते हैं, जो निशुल्क शिक्षा देते हैं।

उनकी शिष्याएँ जो धन अर्जित करती है तो उसका एक अंश अपने गुरू को आजीवन देती रहती हैं। देवदासियां तीन प्रकार की होती थी–राजदासी, देवदासी, और स्वदासी। दक्षिण भारत अन्य संस्कृतियों के आगमन से सुरक्षित रहा अतः वहाँ का द्रविण संगीत मूल रूप से प्राप्त होता है। इस नृत्य में मुद्राओं का बाहुल्य है। इसमें बिखरी हुई कथा वस्तु मिलती है। भरत नाट्यम् में नृत्य के तीन मूलभूत तत्वों को कुशलता पूर्वक शामिल किया गया है– ये हे भाव अथवा मनः स्थिति, राग अथवा संगीत (स्वर–माधुर्य) और ताल अथवा काल समंजन। भरतनाट्यम् की तकनीक में हाथ पैर मुख व शरीर संचालन समन्वयन के 64 सिद्धान्त हैं, जिसका निष्पादन नृत्य पाठ्यक्रम के साथ किया जाता है। इसमें नर्तक अकेले ही अथवा 3–4 के समूह में नृत्य करते हैं। भरतनाट्यम् में मृदंगम से संगति की जाती है और साथ में कर्नाटकी गीत और संगीत गाते हैं।

भरतनाट्यम् की प्रस्तुति को सात भागों मे बांटा जा सकता है, जिंन्हे 'चरण' कहते हैं। प्रथम चरण 'अल्लारिपु' जो प्रार्थना से सम्बंधित है। दूसरे चरण में गायन के साथ नृत्य किया जाता है जिसे 'जेथी स्वरम्' कहते है। तृतीय चरण 'शब्दम्' में साहित्यिक शब्दों से ईश्वर वन्दना और राज की स्तुति आदि की जाती है। 'वर्णम' भरतनाट्यम् का महत्वपूर्ण चौथा चरण है, जिसमें पद संचालन और आंगिक अभिनय का पूर्ण समन्वय देखने को मिलता हैं। पांचवे चरण 'पद्म' में श्रृंगारिक भावजन्य चेष्टाओं की प्रधानता, छठे चरण 'तिल्लाना' में तीव्र गति का प्रदर्शन तथा सातवें एवं अन्तिम चरण में संस्कृत के श्लोकों द्वारा भगवान कृष्ण की आराधना की जाती है।

इस नृत्य में पांच आसन होते हैं–पदम्, सृष्टि, योग, वीर, और सिद्ध तथा चार तरह के घुटने के मोड–मण्डला, अर्धमण्डला, सममण्डला और नृत्त मण्डला होते हैं। इस नृत्य में तीन पाद विक्षेप होते हैं। अंचित, कुन्चित और उर्धान्चित तथा चार प्रकार की गति–करण, अंगहार, रेचक और पिंडीविध होती है।

वेशभूषा में लम्बी साड़ी दोनो पैरों से चिपकी रहती है। धोती के ऊपर वाले हिस्से को दुपट्टे की भांति कंधे पर रखते हुए कमर पर लपेटते हैं। कमर में करधनी तथा बाजू और गले में आभूषण पहनते हैं। पुरूष या स्त्री कोई भी इस नृत्य को प्रस्तुत कर सकता है। जब पुरूष इस नृत्य का प्रदर्शन करता है तो इसे कचपुरी नृत्य कहते है।

कथकली

कथकलि दक्षिण भारत का एक प्राचीन शास्त्रीय नृत्य है। केरल के मालाबार, कोचीन और ट्रावनकोर के आसपास प्रचलित नृत्य शैली है। 17 वीं शताब्दी में कोट्टारक्कारा तंपुरान (राजा) ने सियारामनाट्टय का आविष्कार किया था, उसी का विकसित और परिष्कृत रूप है कथकली। कथकली शब्द की व्युत्पत्ति 'कथा–केली' से है और इसका अर्थ नृत्य–नाट्य है। मालाबार क्षेत्र में यह परम्परा कृष्ण–नाट्य तथा राम–नाट्य के रूप में प्रचलित रही हैं। इसमें रामायण, महाभारत अथवा किसी पौराणिक कथा का चित्रण

किया जाता है। भारतीय अभिनय कला की नृत्य नामक रंगकला के अन्तर्गत कथकलि की गणना होती है।

कथकली के साहित्यिक रूप को 'आट्टकथा' कहते है। गायक गण वाद्यो के वादन के साथ 'आट्टक्कथाऐं' गाते है। जिस पात्र का संवाद होता है वह रंगमंच पर आकर कथा के अनुसार अभिनय करता हैं। सर्वप्रथम परदे के पीछे ईश्वर–स्तुति की जाती है और कथानकों का परिचय दिया जाता है। संगीत के लिए 'मर्दल', रूद्रवीणा और बांसुरी का प्रयोग होता है। अभिनेता पैंरो में घुंघरू बांधता है। स्त्री का अभिनय भी अधिकतर पुरूष करते हैं। कथकलि में तैयम, तिरा, मुडियेटुट, पडयाणि इत्यादि केरलीय अनुष्ठान कलाओं तथा कूत्तु, कुडियाट्टम, कृष्णनाट्टय आदि शास्त्रीय कलाओं का प्रभाव भी देखा जा सकता है।

साज–सज्जा एव वेशभूषा इस नृत्य की प्रमुख विशेषता है। मुख–सज्जा के अन्तर्गत विभिन्न रंगीन लेप निर्धारित है। मुख को प्रायः लाल या पीले रंग से रंगा जाता हैं, और आँखों एवं भौहों के चारों ओर सफेद रंग की रेखायें खीची जाती है। पात्र के अनुसार मस्तक पर तिलक और सिर पर गोल मुकुट लगाया जाता है। वेशभूषा के अन्तर्गत एक जैकेट और विचित्र प्रकार का घाघरा अथवा कभी कभी लम्बा चोगा जिसका घेरा चौड़ा और बाहें फैली हुई रहती है। कुण्डल, लकडी की चूड़ी, कवच, मुकुट, हार, फूलमाला आदि से श्रृंगार करते हैं।

कथकली का मंच जमीन से ऊपर उठा हुआ एक चौकोर तख्त होता है, इसे 'रंगवेदी' या 'कलियरंगू' कहते हैं। कथकली की प्रस्तुति रात में होने के कारण प्रकाश के लिए मंद्रदीप (आट्टविळक्कु) जलाया जाता है। प्रारम्भ में अनुष्ठान किये जाते हैं जो कि केलिकोटुट, अंगुरकेलि, तोडयम, वंदनश्लोक, पुरप्पाड़, मंजुतल आदि हैं। इसके पश्चात् नाट्य प्रस्तुति और पद्य पढ़कर कथा का अभिनय होता है। धनाशि नाम के अनुष्ठान के साथ कथकली का समापन होता है।

मणिपुरी

मणिपुर क्षेत्र में सर्वाधिक प्रचलित होने के कारण इसे मणिपुरी नृत्य कहते हैं। यह पूर्वी बंगाल और असम का शास्त्रीय और लोक–नृत्य दोनों है। इसकी उत्पत्ति कब ओर कैसे हुई इस सम्बन्ध में कोइ ऐतिहासिक प्रमाण नही मिलता है। इन नृत्य को अधिकतर बालिकाएँ ही करती हैं। पुरूष बहुत कम सख्या में नृत्य करते हैं। यह एक प्रकार की रास लीला है, इसमें नर्तक और नर्तकी कृष्ण, राधा और गोपियों का रूप बनाकर नृत्य करते हैं, तथा अंग संचालन द्वारा रस सृष्टि करते हैं।

माणिपुरी में रासलीला के मुख्य चार प्रकार हैं–

बसन्त रास, महारास, कुंजरास और नित्यरास।

किसी में राधा के आत्मसमर्पण का भाव है तो किसी में कृष्ण

राधा के श्रृंगार का और किसी में वियोग का। नृत्य में पद संचालन भौंहों का संचालन, हस्तमुद्रायें और अंगहार सभी कुछ लास्यमय रहता है। मणिपुर का सबसे प्रसिद्ध और प्राचीन नृत्य लाई हरोबा है, जिसमें सृष्टि के उद्‌भव की गाथा अभिनय के द्वारा प्रस्तुत की जाती है। यह एक परम्परागत नृत्य है, जिसे 'मैतेयी' नामक नर्तक करते है।

इस नृत्य की वेशभूषा बहुत आकर्षक होती है। नारी पात्रों के पहनावे में चमकीले अथवा रेशमी कपड़े का ढ़ीला लंहगा होता है जिसे 'कूमिन' कहते है। इस पर शीशे व जरी की बहुत सुन्दर कलाकारी रहती है। इसके उपर एक पारदर्शक सिल्क या पेशवान होता है। 'कूमिन' को घुट्नों के पास फुलाने के लिए अन्दर से उसमे बांस की खपच्चियों को गोल करके बांध दिया जाता है, इससे वह लंहगा फूला हुआ और गोल रहता है। गोपियाँ प्रायः लाल रंग और राधा हरे रंग के वस्त्र पहनती हैं। सिर के बालों को एक गांठ जैसा बाधा जाता है और सिर के पिछले भाग की और उंचा उठाकर कस दिया जाता है। इस गांठ के ऊपर बालों के उपर चांदी का एक आभूषण पहना जाता है। बालों के उपर एक पारदर्शक वस्त्र ओढ़नी की तरह डाला जाता है, जो मुख को भी ढ़ाँके रहता है। गोपियों की भाँति कृष्ण का भी उत्तम श्रृंगार किया जाता है, उन्हे प्रायः जोगिया रंग के वस्त्र पहनाते है। मुकुट मालाऐं तथा आभूषण धारण कराये जाते है।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियां

महत्त्वपूर्ण बिन्दुः–

1. मानवीय अभिव्यक्तियों के रसमय प्रदर्शन की कला को 'नृत्य कला' कहते हैं।
2. नृत्य के विषय में उपलब्ध ग्रंथो में सबसे प्राचीनतम् भरतमुनि का नाट्यशास्त्र हैं। नाट्यशास्त्र में नृत्य कला के सिद्धान्तों का वर्णन प्राप्त होता है।
3. लोक नृत्यों का विकसित एवं परिष्कृत रूप ही शास्त्रीय नृत्य है।
4. 'कथक' शब्द की उत्पत्ति कथा से हुई है। कथनं करोति कथकः अर्थात् जो कथन करता है वह कत्थक है।
5. कच्छावा के राजपूतों की राजसभा में जयपुर और अवध के नवाब वाज़िद अलीशाह की राजसभा में लखनऊ घराने का विकास हुआ।
6. भरतनाट्यम् दक्षिण भारत के तमिलनाडू राज्य से संबंधित है।
7. भरतनाट्यम् में देवदासियों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इसके आचार्य नत्तुवन कहलाते हैं।
8. 17 वीं शताब्दी में कोट्टारक्कारा तंपुरान (राजा) ने जिस रामनाट्टम् का आविष्कार किया, उसी का विकसित एवं परिष्कृत रूप कथकलि है।
9. मणिपुरी मे रासलीला के मुख्य चार प्रकार हैं–
   बसन्तरास, महारास, कुंजरास और नित्यरास
10. मणिपुर का सबसे प्राचीन और प्रसिद्ध नृत्य 'लाईहरोबा' है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्नः–

1. नृत्य कला समन्वय है–

   (अ) शब्द (ब) संगीत

   (स) मुद्रा (द) उपर्युक्त सभी

2. नृत्य के विषय में उपलब्ध प्राचीनतम ग्रंथ है–

   (अ) ऋग्वेद (ब) नाट्यशास्त्र

   (स) रामायण (द) महाभारत

3. नाटकीय अन्दाज में हाव–भाव द्वारा कथा कहने की शैली कहलाती है –

   (अ) भरतनाट्यम (ब) मणिपुरी

   (स) कत्थक (द) कथकली

4. कत्थक के लखनऊ घराने का विकास किसके शासन में हुआ –

   (अ) वाजिद अली शाह (ब) कच्छवा के राजपूत

   (स) मानसिंह तोमर (द) उपर्युक्त में कोई नहीं

5. भरतनाट्यम का संबंध किस राज्य से है –

   (अ) आसाम (ब) केरल

   (स) तमिलनाडू (द) कर्नाटक

6. सोनल मानसिंह नृत्य की किस कला से संबंधित है –

   (अ) कत्थक (ब) मणिपुरी

   (स) भरतनाट्यम (द) मणिपुरी

7. भरतनाट्यम की प्रस्तुति को मोटे तौर पर कितने भागों में बांटा गया है –

   (अ) पाँच (ब) तीन

   (स) चार (द) सात

8. कथकलि के साहित्यिक रूप को किस नाम से जाना जाता है –

   (अ) आट्टक्कथा (ब) रामनाट्टम्

   (स) कृष्णनाट्य (द) कुडियट्टम्

9. "आट्टविळक्कु" क्या है –

   (अ) रंग (ब) वस्त्र

   (स) प्रकाश (द) मंच

10. मणिपुरी नृत्य शैली भारत के किन क्षेत्रों में प्रचलित है –

(अ) बंगाल (ब) असम

(स) मणिपुर (द) उपर्युक्त सभी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. नृत्य कला की परिभाषा दीजिये।
2. कलाओं का उद्देश्य क्या है?
3. नृत्य कला के सिद्धान्तों का लिखित वर्णन सर्वप्रथम किस ग्रंथ में मिलता है?
4. कत्थक शैली का सम्बंध भारत के किस क्षेत्र से है?
5. कत्थक रायगढ़ घराना क्यों प्रसिद्ध है?
6. भरतनाट्यम् के कितने सिद्धान्त हैं?
7. "जेथीस्वरम्" क्या है?
8. रामनाट्टम् का आविष्कार किसने किया?
9. कथकली के मंच को क्या कहते हैं?
10. किस नृत्य शैली में प्रायः बालिकाऐं नृत्य करती हैं?
11. मणिपुरी के पारदर्शी वस्त्र का क्या नाम है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. "तिहाई" किसे कहते हैं?
2. कत्थक नृत्य के घरानों के नाम लिखिए।
3. भरतनाट्यम् के दो प्रसिद्ध कलाकारों के नाम लिखिए।
4. कत्थक के दो प्रसिद्ध कलाकारों के नाम लिखिए।
5. कत्थक नृत्य शैली राजस्थान से किस प्रकार संबंधित है?
6. कथकलि शब्द की व्युत्पत्ति को समझाइये।
7. कथकली में किन–किन वाद्यों का प्रयोग किया जाता है?
8. मणिपुरी में रासलीला के प्रकारों को लिखिए।
9. "लाईहरोबा" की विषयवस्तु क्या होती है?
10. "कूमिन" क्या होता है?

अतिलघुत्तरात्मक उत्तरमाला

1. द 2. ब 3. स 4. अ 5. स 6 स

7. द 8. अ 9. स 10. द